International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Volume 7-Issue 6-June-2017,
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

भीष्म

(प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारक भीष्म की कर्म नीति)

डॉ0 मो0 इमरान खाँ
सहायक प्रोफेसर–राजनीति विज्ञान मुमताज
पी0जी0 कालेज, लखनऊ

महाकाव्य महाभारत का इतिहास ईसा से 10वीं सदी पूर्व माना जाता है। युद्ध की समाप्ति के बाद दुःखी युधिष्ठिर के प्रश्नों का जो उत्तर बाण शैय्या पर लेटे भीष्म ने दिया वह शांतिपर्व कहलाया, उसी में भीष्म के राजनीतिक विचार अन्तर्निहित हैं। भीष्म की मान्यता थी कि जिस कार्य से स्वयं अपने सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियों का आध्यात्मिक कल्याण हो, उसे ही धर्म कहा जाता है। समस्त प्राणियों के धारण करने की वजह से ही यह धर्म कहलाता है। राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भीष्म के विचार आधुनिक पाश्चात्य विचारक हाब्ज, लाक, रूसो के पूर्णगामी हैं। मत्स्य न्याय के स्थान पर न्याय की स्थापना के लिए ब्रह्मा ने शास्त्र की रचना कर उसमें धर्म, अर्थ और काम का वर्णन किया और कहा, 'लोक रक्षा करने वाली इस रीति को दण्ड के साथ प्रयोग करने से यह सभी प्राणियों को नियन्त्रित करती हुयी पृथ्वी पर प्रचलित होगी। यह जगत दण्ड से बना है, इसीलिए यह नीति दण्डनीति कहलायी। महाभारत में भीष्म ने राज्य को सप्तांग कहा है। शान्तिपूर्व के अध्याय 69 में कथन है कि राजा को उचित है कि वह आत्मा, सेवक, कोष, दण्ड, मित्र, जनपद और पुत्र इस सप्तात्मक राज्य का यत्नपूर्वक प्रतिपालन करे। भीष्म ने राज्य के उद्देश्य के बारे में बता दिया है कि, राजा अर्थात राज्य का उद्देश्य प्रजा की सुरक्षा और सुख तथा सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। मनुष्यों का उद्देश्य धर्म, अर्थ और काम बताया गया है और राज्य का कार्य इनकी प्राप्ति में सहायता देना है। भीष्म के अनुसार राजा देव है क्योंकि वह धर्मपरायण है परन्तु ईश्वर का प्रतिनिधि नहीं है, उसका देवत्व उसके दिव्य–चरित्र पर आधारित है। राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजाहित है प्रजा की सम्पन्नता, सुख–शांति और समृद्धि ही राजा का एक मात्र लक्ष्य है। उस राजा को सर्वश्रेष्ठ कहना चाहिए जिसके राज्य में प्रजा पिता के घर में पुत्र की तरह निर्भय हो। महाभारत में शासन और राजा शब्दों का प्रयोग एक दूसरे के लिए हुआ है। राज्य अथवा शासन का प्रमुख कार्य समस्त प्रजा की रक्षा करना है साथ ही शासन का एक अहम कार्य न्याय का प्रशासन है। जनता के प्रति शासन का रूख पित्रतुल्य अथवा स्नहे मय होना चाहिए। भीष्म

का कहना था कि विधि के शासन में रहने से मनुष्य सुखी रहत` हैं। न्याय–अन्याय को विचार कर धर्म के अनुसार दण्ड विधान करना चाहिए, जो जिस दण्ड के योग्य है उसे उसी प्रकार का दण्ड दिया जाए। महाभारत में उल्लेख है कि राजा को सम्राट बनने की भावना प्रबल होती थी उसकी पूर्ति के लिए वे अनेक यज्ञ करत` थे जैसे– वाजपेय, पुण्डरिक, सर्वमेघ, अश्वमेघ, राजसूय आदि। सभापर्व में 25–32 अध्याय में युधिष्ठिर के चार भाइयों द्वारा विभिन्न दिशाओं में दिग्विजय का वृतान्त दिया गया है। राजसूय यज्ञ से पूर्व अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव ने दक्षिण दिशा और नकुल न` पश्चिम दिशा को जय किया। भीष्म का कहना है कि, क्षत्रिय का घर पर मरना श्रेष्ठ नही है। वीर क्षत्रिय युद्ध में संग्राम करके शास्त्रों से घायल होकर मृत्यु लाभ प्राप्त करते हैं। शूर पुरूष प्राण की आशा छोड़कर युद्ध में शामिल हो पीठ नही दिखाते अर्थात् भागते नही वे इन्द्रलोक में वास करते हैं। महाभारत मं` भीष्म विशेष परिस्थिति मे कहत`हैं कि आपातकाल में अधर्म भी धर्म के लक्ष्ण पाता है, शास्त्र की मर्यादानुसार आपातकाल में प्रजा–पीड़न भी धर्म में गिना जाता है, ऐसा न करने से अधर्म होता है। ऐसी स्थिति में श्रेष्ठ क्षत्रिय तपस्वियों और ब्राह्मणों को छोड़कर अन्य सभी के धन ले सकता है। आपातकाल में नैतिकता के अपने सिद्धान्त होते हैं। भीष्म कहते हैं कि इस जगत में बिना कारण के कोई पुरूष किसी का मित्र अथवा शत्रु नही होता, स्वार्थ साधन के ही निमित्त शत्रु–मित्रों का चयन होता है, इसलिए स्वार्थ ही बलवान है। वैदेशिक नीति के क्षेत्र में अनेक बातें कूटनीति पर आधारित है। वनपर्व में कहा गया है कि राजा राज्य जीतन` के लिए जो पाप करता है उसे बाद में यज्ञ और उपहार द्वारा धोया जा सकता है। डा0 घोषाल ने भी भीष्म के विभिन्न उपदेशों में से सात के उद्धरण देकर निष्कर्ष निकाला है कि हमारे राजनीतिक विचारों के इतिहास में उनका महत्व है, क्योंकि उनमें शासन की नीतियों के सम्बन्ध में नैतिक प्रश्न अन्तर्निहित है। राज शासन के प्रति भीष्म का सामान्य नजरिया यह है कि क्षत्रिय धर्म नैतिकता से ऊपर है। परन्तु वह इसे सब आदर्शो से उच्च बताते हुए कहता है कि राजा का रक्षा कार्य सबसे अधिक नैतिक कार्य है। युद्ध स्थल की नैतिकता के सम्बन्ध में डा0 बेनी प्रसाद ने लिखा है– ''महाभारत कूटनीति के सिद्धान्तों की तुलना में, युद्ध स्थल की नैतिका के ऊँचे स्तर को सिखाती है। क्षत्रिय धोखे के बदल ही धोखा कर सकता है औचित्य के जवाब में उसे उचित मार्ग अपनाना उचित है। रथ पर चढ़े योद्धा के मुकाबले में क्षत्रिय को घोड़े पर नही चढ़ना चाहिए और कवच न पहने हुए योद्धा के विरूद्ध, कवच पहन कर युद्ध नही करना चाहिए, महाभारत में अनेक योद्धाओं ने इस आदर्श का विभिन्न मात्राओं में पालन किया, परन्तु द्रोण

पर्व में भयानक युद्ध में शूरवीरों ने इन आदर्शो को श्रृद्धांजली दी है। इस तरह युद्ध में विजय अहम है इसके लिए प्रत्येक कदम उठाना सही माना गया। भीष्म पूर्व में प्रसिद्ध भगवतगीता का समावेश कर्मयोग की नजर से महत्व रखता हैं आज भी इससे कर्म (कार्य) करन` की प्ररेण लोग लेते है फल की इच्छा किए बगैर। भारतीय आधुनिक विचारको में विशेषकर, तिलक, अरविन्दघोष आदि ने भीष्म के कर्म के सिद्धान्त से प्रेरणा ली और भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई।

भीष्म ने महाभारत के महायुद्ध की विनाशलीला देखी थी, इसलिए उन्होंने युद्ध का निषेध किया है। उनका मानना है कि जब कोई समाधान न हो तभी युद्ध होना चाहिए। विशेष परिस्थितियों में उन्होंने यद्धु को वैध माना है। राजा को लोकरक्षा के लिए सदैव युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए, राज्य विस्तार के लिए वह युद्ध के विरोधी थे। भीष्म राजतंत्रामक शासन व्यवस्था के समर्थक थे फिर भी युधिष्ठिर को उपदेश देते हुये कहते हैं कि, जिन राज्यों में धर्मशास्त्रों के अनुसार न्याय–व्यवस्था की स्थापना होती है वे गणराज्य उन्नति के पथ पर अग्रसर होते हैं। भीष्म के उपदेश मैकियावली के पूर्वगामी हैं जो कर्म करने, व्यवहारिक और यर्थाथपरक हैं, आधुनिक राज्य अपनी वैदेशिक नीति तथा कूटनीति में इसका उपयोग करते हैं। सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1-अलतेकर – प्राचीन भारतीय शासन पद्धति

2-के0पी0 जयसवाल – हिन्दू पॉलिटी

3-बी0एल0 फाड़िया – भारतीय राजनीतिक चिन्तक

4-आर0सी0 गुप्ता – इण्डिन पॉलिटिकल थॉट